

बेर के प्रमुख कीट एवं व्याधियां

जसवीर सिंह¹ एवं जयवीर सिंह ढेवा²

¹स्नातकोत्तर छात्र पादप रोग विज्ञान, सैमहिगिंगन बॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी
एव विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश -211007

²शोध छात्र कृषि-वानिकी, सैमहिगिंगन बॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एव विज्ञान विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तरप्रदेश -211007

बेर का परिचय: शुष्क क्षेत्रों में उगाए जाने वाले फलों में बेर का विशेष स्थान है यह भारत में उगाए जाने वाले फलों में काफी प्राचीन फल है विभिन्न प्रकार की मिट्टी और जलवायु में सहनशीलता के कारण यह फल दिन-प्रतिदिन भारतीय कृषकों में लोक प्रिय हो रहा है इस फल को गरीबों का फल कहकर भी पुकारा जाता है भारत के उत्तरी राज्यों में विशेष कर हरियाणा, राजस्थान पंजाब आदि में इन की बागवानी व्यवसायिक स्तर पर की जाती है शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों हेतु अति उपयुक्त फल है जहां अन्य फल ठीक से नहीं हो पाते हैं क्यों कि मई व जून महीनों में अन्य फलों की अपेक्षा कम से कम पानी की जरूरत होती है इन दिनों यह सुषुप्त अवस्था में होता है और इसकी पत्तियां झड़ जाती है साथ इसकी मुसला जड़ गहराई से पानी अवशोषित कर सकती हैं।



फल मक्खी:

यह बेर का बहुत ही हानिकारक कीट है यह कीट बेर को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाता है। यह कीट कभी-कभी तो 70 से 80% फलों को खराब कर देता है फल आम तौर पर जल्दी पकते हैं तथा नीचे गिरजाते हैं गिरे हुए अथवा पेड़ पर लगे फल व मक्खी से ग्रसित फलों का आकार कुछ टेढ़ा मेढ़ा हो जाता है ऐसे फलों को बेचना बहुत कठिन होता है यह मक्खी कच्चे फलों के ऊपरी स्तर के नीचे अंडे देती है इस मक्खी की वयस्क मादा फलों के लगने के तुरन्त बाद उन में अण्डे देती है ये अण्डे लार्वा में बदलकर फल

को अन्दर से नुकसान पहुँचाते हैं। इसके आक्रमण से फलों की गुठली के चारों ओर एक खालीस्थान हो जाता है तथा लटे अन्दर से फल खाने के बाद बाहर आ जाती है। इसके बाद में मिट्टी में प्यूपा के रूप में छिपी रहती है तथा कुछ दिन बाद व्यस्क बनकर पुनः फलों पर अण्डे देती है।



रोकथाम

इसकी शक्ति को कम करने के लिए तो निम्न प्रकार के उपाय हैं इसके लिए मई-जून में बाग की गहरी जुताई करें व मिट्टी पलटे ताकि मक्खी के प्यूपा नष्ट हो जाएं। जनवरी व फरवरी के महीने में बाग में मेलथियान 0.2% का छिड़काव करें। फल लगने के बाद जब अधिकांश फल मटर के दाने के साइज के हो जाए उस समय क्यूनालफास 25 ईसी 1 मिलीलीटर प्रतिलीटर

पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। दूसरा छिड़काव पहले छिड़काव के 20-25 दिन बाद करें।

को मारने हेतु बाग में चार से पांच जगह खुले बर्तनों में मिठाई लेने का प्रयोग करें। टीकड़ी, काठा, इलायची, उमरान आदि फल मक्खी रोधी किस्में हैं। इन किस्मों के बाग लगाएं।

छाल भेदक इल्ली

इस कीट को इंबरबेला क्वाड्रानोटाटा कहते हैं। यह कीट उन बागों में पाया जाता है जहां बाग की उचित देखभाल नहीं होती है इस कीट की इल्ली तने की छाल को खाकर इसमें छेद कर देती है। छाल खाने के बाद इल्ली एक प्रकार का काला अवशेष छोड़ती है जो प्रभावित हीस्सों पर चिपका रहता है।

रोकथाम

इस कीट की रोकथाम के लिए बाग को साफ रखना चाहिए तथा तने में बने हुए छिद्रों में क्लोरोफॉर्म, पेट्रॉल या मिट्टी के तेल में रुई डुबो कर भरने के बाद छिद्र को गीली मिट्टी में बन्द कर दें।

छालभक्षी कीट:

यह कीट नई शाखाओं के जोड़ पर छाल के अन्दर घुसकर जोड़ को कमजोर कर



देता है फलस्वरूप वह शाखा टूट जाती है, जिससे उस शाखा पर लगे फलों का सीधा नुकसान होता है।

रोकथाम

इस की रोकथाम के लिए खेत को साफ सुथरा रखे, गर्मी में पेड़ों के बीच में गहरी जुताई करें। जुलाई-अगस्त में डाइक्लोरवास 76 ईसी 2 मिली लीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर नई शाखाओं के जोड़ों पर दो-तीन बार छिड़काव करना चाहिए।

चेफर बीटल:

इसका प्रकोप जून-जुलाई में अधिक होता है यह पेड़ों की नई पत्तियों एवं प्ररोहों को नुकसान पहुँचाता है इससे पत्तियों में छिद्र हो जाते हैं।

रोकथाम

इसके नियंत्रण के लिए पहली वर्षा के तुरन्त बाद क्यूनालफास 25 ईसी 2 मिली या -कार्बेरिल 50 डब्लूपी 4 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

प्रमुख रोग

सूटीमोल्ड:

इस रोग से ग्रसित पत्तियों के नीचे की सतह पर काले धब्बे दिखाई देने लगते हैं

जो कि बाद में पूरी सतह पर फैल जाते हैं और रोगी पत्तियाँ गिर भी जाती हैं।

रोकथाम

नियंत्रण के लिए रोग के लक्षण दिखाई देते ही मैन्कोजेब 3 ग्राम या कापरआक्सीक्लोराइड 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
पत्ती धब्बा/झुलसा रोग:

इस रोग के लक्षण नवम्बर माह में शुरू होते हैं यह आल्टरनेरिया नामक फँफूद के आक्रमण से होता है। रोगग्रस्त पत्तियों पर छोटे-छोटे भूरे रंग के धब्बे बनते हैं तथा बाद में यह धब्बे गहरे भूरे रंग के तथा आकार में बढ़कर पूरी पत्ती पर फैल जाते हैं। जिससे पत्तियाँ सूखकर गिरने लगती हैं। नियंत्रण हेतु रोग दिखाई देते ही मैन्कोजेब 3 ग्राम या थायोफिनेट मिथाइल 1 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अन्तर पर 2-3 छिड़काव करें।

छाछया (पाउडरी मिल्ड्यू या चूर्णी फँफूद):

इस रोग का प्रकोप वर्षा ऋतु के बाद अक्टूबर- नवम्बर में दिखाई पड़ता है। इससे बेर की पत्तियों, टहनियों व फूलों पर सफेद पाउडर सा जमा हो जाता है तथा प्रभावित

भागों की बढ़वार रुक जाती है और फल व पत्तियाँ गिर जाते हैं।



इसकी रोकथाम के लिए जिनेब (0.25 %) अथवा ब्लाइटॉक्स (0.3 %) के 15 दिनों के अन्तराल पर 2-3 बार छिड़काव करने से यह रोग नियंत्रित किया जा सकता है।

रोकथाम

इसकी रोकथाम के लिए केराथेन एल.सी. 1 मिली लीटर या घुलनशील गंधक 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। 15 दिन के अन्तर पर दो-तीन छिड़काव पूर्ण सुरक्षा के लिए आवश्यक होते हैं।

कज्जली शैवाल

यह रोग इसारिओप्सिस (*Isariopsis* spp) शैवाल से फैलता है। इसमें पत्तियों की निचली सतह पर काले धब्बे बनने लगते हैं जो धीरे धीरे फैल कर पूरी सतह पर छा जाते हैं। रोग की तीव्रता होने पर पूरी निचली सतह मुड़ जाती है और ऊपरी सतह का रंग पीला-भूरा हो जाता है तथा प्रभावित पत्तियाँ गिर जाती हैं।